राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 9 अगस्त , 2024

अगस्त क्रांति एवं क्षेत्रीय इतिहास लेखन

संगोष्ठी के बारे में

1942 का "भारत छोड़ो" आंदोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक मील का पत्थर है। यह भारत में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ी गई आखिरी और निःसंदेह सबसे कड़ी स्वतंत्रता की लड़ाई थी। इसने 1857 के महान विद्रोह सहित सभी पूर्ववर्ती आंदोलनों को आकार और तीव्रता के कई पैमानों में पीछे छोड़ दिया था।

1942 का जन-उभार अनगिनत कष्ट और पीड़ा की स्थिति में भी देश के एक छोर से दूसरे छोर तक लोगों की उसके प्रति उत्साही प्रतिक्रिया, भारी बाधाओं के सामने व्यक्तिगत और सामूहिक वीरता और बहादुरी के उदाहरणों से परिपूर्ण है।

यह आन्दोलन और इसकी विशालता वास्तव में इसमें आहूति देने वाले लाखों गुमनाम नायकों की आशाओं, आकांक्षाओं , इच्छाओं और आजाद भारत के लिए उनके दृढ संकल्प का स्मृति शेष भी है। क्योंकि युद्धकालीन सेंसरशिप ने समकालीन प्रकाशन को रोक दिया था। सरकार की अत्यंत क्रूर दमनात्मक नीतियों और अवैध गतिविधियों के लिए धरपकड़ तथा मुकदमों की संभावना के कारण अधिकांश भूमिगत कार्यकर्ता अपनी गतिविधियों से संबंधित सभी निजी कागजात नष्ट करने के लिए बाध्य हुए और परिणामस्वरूप आज भी हमारे पास इस आन्दोलन के विभिन्न आयामों को जानने समझने के लिए पर्याप्त दस्तावेजी साक्ष्यों का अभाव बना हुआ है। समाचार कवरेज के ब्लैकआउट के बावजूद आंदोलन ने जो परिमाण प्राप्त किया तथा जिस प्रकार से इसने बुद्धिजीवी वर्ग के साथ साथ गाँव देहात के करोड़ों किसानो ,मजदूरों व नवजवानों की चेतना को झकझोर कर उनको प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन से जोड़ा था। यह वास्तव में इसकी सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक है। लेकिन उस समय की सेंसरशिप ने आज ऐतिहासिक पुनर्निर्माण के कार्य को कठिन बना दिया है। ऐसे में इसके विभिन्न आयामों और जनता के इतने विशाल आन्दोलन के जनपक्ष को समझने के लिए उन स्वतंत्रता सेनानियों के किस्से, कहानियों ,आख्यानों, जो क्षेत्रीय अथवा आंचलिक स्तर पर लोक स्मृति या लोक संस्कृति में किसी भी रूप में विद्यमान है उन्हें संकलित, संरक्षित और दस्तावेजीकृत करने की प्रबल आवश्यकता है।

विषय : अगस्त क्रांति एवं क्षेत्रीय इतिहास लेखन

उप-विषय

1. अगस्त क्रांति में समाज और देश के विभिन्न हिस्सों की भूमिका
2. अगस्त क्रांति के गुमनाम नायक /नायिका
3. अगस्त क्रांति सिनेमा और साहित्य
4. अगस्त क्रांति के मुकदमों का अध्ययन
5. अगस्त क्रांति ,कांग्रेस तथा अन्य संगठन
6. अगस्त क्रांति के वैचारिक संघर्ष एवं विरोधाभास
7. अगस्त क्रांति और संचार साधन
8. अगस्त क्रांति और सामानांतर सरकारें
9. अगस्त क्रांति और ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियां
10. अगस्त क्रांति और वैश्विक परिदृश्य
11. अगस्त क्रांति के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक निहितार्थ
12. अगस्त क्रांति और महिलाओं का योगदान
13. अगस्त क्रांति में विभिन्न सामाजिक वर्गों का योगदान

- **संगोष्ठी शोध-पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि : 9 अगस्त , 2024**
- **संगोष्ठी-पत्र संप्रेषण हेतु ई-मेल : seminargps23@gmail.com**
- **हिंदी में युनिकोड (Kokila Font 12) अग्रेजी में Times New Roman(Font 12, Space 1.5 cm)**
- **पंजीकरण शुल्क विवरण:**

  शिक्षक – 200/-

  शोधार्थी – 100/-

- पंजीकरण लिंक : https://forms.gle/Y475Z3Cs9Js79SAX6
- **शुल्क भुगतान हेतु :** UPI ID : 9755165592@ybl

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविलय, वर्धा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

मध्य भारत के सतपुड़ा रेंज की पहाड़ियों पर अवस्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय गांधी के सपनों का भारत की तरह भारत के सपनों का विश्वविद्यालय है। महात्मा गांधी के सपनों के भारत में एक सपना राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने का भी था। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के उद्गम से उद्गमित नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन (10-14 जनवरी, 1975) में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए तथा एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय जिसका मुख्यालय वर्धा में हो। यह संभव हुआ वर्ष 1997 में – जब भारत की संसद द्वारा एक अधिनियम पारित करके महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना वर्धा में हुई। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपने स्वरूप में एक अनूठा विश्वविद्यालय है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से कार्यरत यह दुनिया में अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ फ्रेंच,चीनी, स्पेनिश और जापानी जैसी विदेशी भाषाएं हिंदी माध्यम से पढ़ाई जाती हैं। 'ग्लोबलहिंदी' की राह पर यह मील का पत्थर है। विश्वविद्यालय की कार्य-संस्कृति, प्रशासन व कार्य-व्यवहार में गांधी के विचार मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। ज्ञान-विज्ञान की एक संवाहक भाषा के रूप में हिंदी केंद्र-बिंदु बने, विश्वविद्यालय इस महत्वाकांक्षी योजना की सफलता हेतु कटिबध्द है।

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

गांधी एवं शांति अध्ययन सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन के क्षेत्र में एक प्रभावशाली कदम है। यह विषय गांधी की अवधारणा और शांति से इसकी संबद्धता को व्यापक दायरे में समझने की एक दृष्टि देता है। अंतरानुशासनिक चरित्र का यह पाठ्यक्रम नैतिक-दृष्टि, सुशासन, विकेन्द्रीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं इसकी राजनीति के साथ-साथ भू-राजनीति एवं सतत विकास की शिक्षा को अपने में शामिल करता है। यह विषय विद्यार्थी को सतत विकास एवं शांति के साथ उसकी संबद्धता को शिक्षण, शोध एवं विस्तार के व्यापक कार्यक्रमों तक पहुँचाता है। गांधी एवं शांति के विभिन्न पहलुओं को व्यापक-दृष्टि से व्याख्यायित करने वाला यह पाठ्यक्रम न सिर्फ विद्यार्थियों के कौशल एवं क्षमता निर्माण में वृध्दि करता है, बल्कि उन्हें विकास एवं शांति के क्षेत्र में आनेवाली समस्याओं और चुनौतियों को समाधान के लिये प्रेरित भी करता है। गांधी के मूल्यों एवं सिध्दांतों के प्रति गंभीर अध्ययन व शोध के साथ-साथ मानवता के लिए प्रतिबध्दता पैदा करने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम सन् 2004 से संचालित किया गया है। अंतरानुशासनिक पध्दति से तैयार यह पाठ्यक्रम संपूर्ण मानविकी एवं समाज वैज्ञानिक अध्ययन का ऐसा सम्मिलित अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न ज्ञानानुशासनों को देखने व समझने की नई दृष्टि देता है।

कार्यक्रम-विवरण

दिनांक: 9 अगस्त, 2024
समय : अपराह्न 3:00 बजे
स्थान : महादेवी वर्मा सभागार ,तुलसी भवन

अध्यक्षता
प्रो. कृष्ण कुमार सिंह
कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

स्वागत एवं प्रस्तावना
डॉ. राकेश कुमार मिश्र
गाँधी एवं शांति अध्ययन विभाग
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

वक्ता
प्रो. बी. के श्रीवास्तव
इतिहास विभाग
सागर विश्वविद्यालय , मध्यप्रदेश

प्रो. हितेंद्र पटेल
इतिहास विभाग
रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय , पश्चिम बंगाल

प्रो. कृपा शंकर चौबे
जनसंचार विभाग
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. बालाजी चिरडे
दलित एवं जनजातीय अध्यन केंद्र
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

संरक्षक
प्रो. कृष्ण कुमार सिंह
कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

संयोजक
डॉ. राकेश कुमार मिश्र
डॉ. मनोज कुमार राय

सह-संयोजक
डॉ. चित्रा माली
डॉ. अभिषेक सिंह

आयोजन समिति
डॉ पंकज कुमार सिंह , डॉ प्रिंस कुमार सिंह , डॉ देवेन्द्र मौर्य, सुमंत कुमार मिश्र , चंद्रमणि राय, सौरभ मिश्र , प्रवीन कोल्हे , योगेश कुमार जांगिड गुलशन कुमार , महेश दुर्गम , कुमारी सोनम , अभिषेक द्विवेदी , संदीप शुक्ल , विकाश अग्निहोत्री, निरंजन कुमार ,उत्तम आनंद राव केते

ज्ञान शांति मैत्री

अगस्त क्रांति स्मृति दिवस के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय : अगस्त क्रांति एवं क्षेत्रीय इतिहास लेखन

दिनांक : 9 अगस्त , 2024

आयोजक
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, वर्धा - 442 001 (महाराष्ट्र)
दूरभाष: 07152- 230313 /मो. 9970251140
Email: seminargps23@gmail.com
वेबसाइट : *www.hindivishwa.org*